पद १७0

(राग: देस – ताल: त्रिताल)

मना गोविंद वद हे वाचे। कांहीं साधन कर सागर पार व्हावयाचें ।।धु.।। मना बोली कैसी जाली ब्रह्मा सदरीं। राहिला कैसा नवमास माते उदरीं। रक्षण तेंव्हा तुज कोण करी। करिसी विसर स्मरण कां नये याचें।।१।। किती श्रम तुज बाहेर निघतां घडे। बह श्रमुनी दमुनी पडे द्वारापुढें। रक्त मांस जडोनी अट्टहास रडें। मग पडली सांवली नारी नर याची।।२।। बह फिरुनी आलासी योनी नरदेहीं। आतां भजन साधन करी तरि कांही। माणिक म्हणे लाग गुरुपायीं। चुकवी भय यमयाचें।।३।।